International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 14-09-2019; Accepted: 16-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 35-37

हिंदी शब्दकोश निर्माण का समसामयिक परिप्रेक्ष्य

अभिजीत प्रसाद

शोधार्थी एवं शोध सहायक, मानक हिंदी प्रयोग कोश) भाषा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

एक कालबिंदु पर किसी भाषा का अध्ययन समय विशेष में उस भाषा के विभिन्न पक्षों की स्थिति एवं स्वरूप को प्रकाशित करता है जिसे एफ.डी. सस्यूर द्वारा 'समकालिक अध्ययन' (Synchronic study) नाम दिया गया है। यह अध्ययन-विवेचन एक भाषा की किसी इकाई विशेष के संदर्भ में किया जा सकता है और भाषा के सभी पक्षों के संदर्भ में भी। किसी भी भाषा के भाषिक विवेचन के अनेक पक्ष होते हैं जो उसके अंगों, उसके व्यवहार एवं सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों से जुड़े होते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी शब्दकोश से संबंधित विविध पक्षों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

मूल शब्द: कालबिंदु, अध्ययन, प्रकाशित, शब्दकोश, परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना: हिंदी की वर्तमान स्थिति

हिंदी एक प्रमुख आर्यभाषा है जो भारत की राजभाषा है। भाषाविज्ञान में किए जाने वाले पारिवारिक वर्गीकरण की दृष्टि से यह 'भारत-यूरोपिय' (Indo-European) परिवार की भाषा है। इसका विकास संस्कृत से हुआ है। वैसे हिंदी के विकास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। एक भाषा के रूप में इसका उदय 1850 ई. के लगभग हुआ है; अर्थात इसका इतिहास केवल 160 वर्ष पुराना है। इसके संरचनात्मक स्वरूप के मूल में 'खड़ी बोली' है।

हिंदी के शब्दभंडार निर्माण और व्याकरणिक व्यवस्था विवेचन संबंधी मूल कार्य 20वीं शताब्दी के आरंभ में होता है जब सन् 1920 ई. में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 'हिंदी शब्दसागर' का निर्माण किया गया और पं. कामता प्रसाद गुरु द्वारा 'हिंदी व्याकरण' की रचना की गई। हिंदी शब्दसागर 11 खंडों में विभक्त है। इसके बाद से हिंदी शब्दकोश एवं व्याकरण के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्ज़ा प्राप्त हुआ है तब से इस दिशा में कार्य करने के लिए अनेक योजनाएँ निर्मित की गई हैं।

किसी भी भाषा का शब्दभंडार उस भाषा के स्वरूप, व्यवहार एवं विस्तार पर निर्भर करता है। इस मामले में हिंदी की स्थिति बहुत विचित्र रही है जो अभी तक स्पष्ट नहीं हो सकी है। इसका कारण भारतीय समाज में प्राप्त सांस्कृतिक और भाषिक विविधता है। भारत एक बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक देश है। इसके अलावा लगभग 1000 वर्षों तक यहाँ विदेशियों द्वारा शासन किया गया है। इस कारण भारत के सांस्कृतिक एवं भाषिक क्षेत्र में बहुत अधिक विविधता देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति में यदि किसी भाषा को ऐसे देश के राजभाषा या राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापितकिया जाता है तो उसका शब्दभंडार भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। हिंदी शब्दभंडार के संदर्भ में भी यह स्थिति प्राप्त होती है। आज भारत को स्वतंत्र हुए लगभग 65 वर्ष हो गए हैं किंतु अभी भी भाषिक मामलों में एक नीति नहीं प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में भाषा संबंधी किसी कार्य में अनेक समस्याएँ या जटिलताएँ प्राप्त होती हैं। अत: समसामयिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए हिंदी शब्दकोश निर्माण के संदर्भ में निम्नलिखित बातें ध्यान देनें योग्य हैं:

1. आकार एवं प्रकार का निर्धारण

कोशनिर्माण में प्रथम कार्य कोश के आकार एवं प्रकार का निर्धारण करना होता है। यदि इसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी के संदर्भ में देखा जाए तो इनका निर्धारण करना कठिन प्राप्त होता है। इसके संदर्भ में कोश को मुख्यत: दो वर्गों में बाँटकर देखा जा सकता है- सामान्य और विशिष्ट (Generic and Specific)। इसके पश्चात कोश के किसी विशेष प्रकार जैसे पर्याय कोश, विलोम कोश, लोकोक्ति कोश, परिभाषा कोश अथवा विषय कोश आदि का चयन कर आवश्यकता तथा समय एवं संसाधनों की उपलब्धता के अनुरूप निर्माण किया जाता है। किंतु समस्या तब उत्पन्न होती है जब सामान्य कोश का निर्माण किया जा रहा हो। हिंदी के सामान्य कोश का आकार बड़ा ही होगा किंतु इसमें प्रविष्टियों की संख्या 50 से 60 हजार भी हो सकती है और एक लाख से अधिक भी। यह इस पर निर्भर करता है कि हमारे द्वारा शब्दों के चयन करने या नहीं करने के आधार क्या हैं। क्या हम केवल उन्हीं शब्दों को प्रविष्टि के रूप में रखेंगे जो आज सामान्य व्यवहार में हैं या अप्रचित शब्दों को लेंगे? विभिन्न विज्ञानों और शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दावली में से किस प्रकार के शब्दों को लिया जाएगा और किस प्रकार के शब्दों को? इस प्रकार के अनेक निर्णय हैं जो कोश के आकार को प्रभावित करते हैं।

2. हेडवर्ड का चयन

यदि आज के समय में हिंदी शब्दकोश के निर्माण का कार्य किया जाए तो पहली समस्या प्रविष्टियों हेतु हेडवर्डों के चयन की होती है। इसमें पहले यह सुनिश्चित करना होता है कि हेडवर्ड कहाँ से लिए जाएँ। इसके लिए मुख्य रूप से तीन प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं:

(क) हिंदी में उपब्ध विपुल साहित्य
(ख) पूर्व में निर्मित कोई शब्दकोश
(ग) हिंदी में उपलब्ध ऑनलाइन सामग्री

हिंदी में उपलब्ध साहित्य के अंतर्गत साहित्यिक सामग्री (पुस्तकों) के अलावा पत्र-पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं। इनके जितने बड़े भंडार से हेडवर्डों का चयन किया जाएगा, शब्दसंख्या उतनी ही अधिक और प्रामाणिक होगी। यदि केवल हेडवर्ड चयन के लिए किसी शब्दकोश को आधार बनाया जाता है तो समय और श्रम की बचत होती है। किंतु इसमें से कुछ शब्द छोड़ने एवं कुछ नए शब्द जोड़ने का कार्य भी करना होता है। तीसरा विकल्प ऑनलाइन सामग्री से हेडवर्डों का चयन करना है। इस संदर्भ में दो बातें महत्वपूर्ण हैं। प्रथम यह कि इसके लिए मशीनी सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है जो अद्वितीय शब्दों (unique words) को छाँटकर सूचीबद्ध कर दे और फिर उनकी सार्टिंग कर उन्हें क्रम से लगा दे। ऑनलाइन सामग्री हेडवर्डों का चयन करने का लाभ यह होता है कि वर्तमान में प्रयुक्त हो रहे सभी शब्द आ जाते हैं।

हिंदी शब्दकोश हेतु शब्दों के चयन की व्यावहारिक स्थिति को देखें तो वर्तमान में इनमें अँग्रेज़ी शब्दों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। इन शब्दों में ज्ञान-

विज्ञान और तकनीकी शब्द तो हैं ही, इनके अलावा सामान्य व्यवहार के भी अनेक शब्द हैं जिनके लिए हिंदी शब्द उपलब्ध होने के बावजूद हिंदीभाषी समाज जानबूझकर अँग्रेज़ी शब्द का ही प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए कलम को पेन, कुर्सी को चेयर, मेज को टेबल एवं बिस्तर को बेड आदि कहना। इसका कारण अँग्रेज़ी के प्रति हमारा अतिरिक्त मोह है। खैर, कारण जो भी हो इन सभी शब्दों को देना आवश्यक हो जाता है। यदि वर्तमान हिंदी शब्दकोश में हेडवर्डों को स्रोत की दृष्टि से देखें तो आगत शब्दों में पहले अरबी/फ़ारसी के शब्द अधिक थे किंतु अब अँग्रेज़ी के शब्द अधिक हो गए हैं।

3. प्रविष्टि के साथ दी जाने वाली सूचनाएँ

हेडवर्डों के चयन के पश्चात यह देखना होता है कि प्रत्येक हेडवर्ड के कौन-कौन सी सूचनाएँ दी जाएँगी। मुख्यत: दी जाने वाली सूचनाएँ इस प्रकार हैं:

1. उच्चारण : इसकी अधिक आवश्यकता अँग्रेज़ी जैसी भाषाओं में होती है जहाँ 'put' का उच्चारण 'पुट' और 'but' का उच्चारण 'बट' हो जाता है। हिंदी में ऐसी आवश्यकता नहीं दिखाई पड़ती। फिर भी कुछ लोग उच्चारण रोमन या आई.पी.ए. में देने की बात करते हैं।
2. व्युत्पत्ति : हिंदी में अनेक भाषाओं से शब्द आए हैं। अत: उनकी व्युत्पत्ति देना आवश्यक होता है। व्युत्पत्ति देते समय सबसे अधिक समस्या अरबी/फ़ारसी के शब्दों के बीच होती है जिन्हें बिना प्रामाणिक कोश देखे बताना कठिन होता है।
3. व्याकरणिक सूचना : इसके अंतर्गत शब्दवर्ग (Part of Speech) और साथ ही अन्य व्याकरणिक सूचना जैसे संज्ञा के साथ लिंग की सूचना दी जाती है क्योंकि हिंदी में संज्ञा शब्दों का लिंग निर्धारण अपने-आप में एक बड़ी समस्या है। इसी प्रकार क्रिया के सकर्मक, अकर्मक और प्रेरणार्थक रूप की सूचना दी जाती है। शब्दों के दिए जाने वाले प्रमुख शब्दवर्ग एवं संबंधित सूचनाएँ इस प्रकार हैं-

[अव्य.] – अव्यय
[क्रि-अ.] – अकर्मक क्रिया
[क्रि.वि.] – क्रिया विशेषण
[क्रि-स.] – सकर्मक क्रिया
[क्रि-सहा.] – सहायक क्रिया
[नि.] – निपात
[पर.] – परसर्ग
[ला.अर्थ] – लाक्षणिक अर्थ
[मु.] – मुहावरा
[यो.] – योजक
[वि.] – विशेषण
[विस्म.] – विस्मयादिबोधक
[सं-पु.] – संज्ञा पुल्लिंग
[सं-स्त्री.] – संज्ञा स्त्रीलिंग
[सर्व.] – सर्वनाम
[लोको.] – लोकोक्ति

(घ) अर्थ: अर्थ किसी प्रविष्टि के संदर्भ में दी जाने वाली अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण सूचना है। सामान्यत: कोश में किसी भी शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं। अत: एकाधिक अर्थ देते समय यह देखना आवश्यक होता है कि उनका क्रम क्या होगा, जैसे- अधिक प्रचलित से कम प्रचलित का क्रम या नए से पुराने अर्थ का क्रम आदि।

(ङ) चित्र : कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो महत्वपूर्ण, कम प्रचलित या जिसे अर्थ और व्याख्या द्वारा समझा पाना संभव न हो। इनका चित्र भी दिया जाना चाहिए। इस प्रकार के शब्दों में पशु, पक्षी, पारंपरिक रूप से प्रचलित कोई सामान अब कम प्रयोग आता हो आदि हैं।

4. उपलब्ध शब्दकोश

यदि वर्तमान में एक नए शब्दकोश का निर्माण किया जा रहा हो तो यह देखना स्वत: ही आवश्यक हो जाता है कि अभी तक कितने शब्दकोश निर्मित किए जा चुके हैं और विभिन्न सूचनाएँ प्रदान करने के लिए किन-किन शब्दकोशों का प्रयोग किया जाएगा। वर्तमान हिंदी शब्दकोश निर्माण में प्रयुक्त किए जा सकने वाले प्रमुख शब्दकोश इस प्रकार हैं-

क्र. सं.	नाम	कुल खंड	कोशकार	प्रकाशक
1	बृहत हिंदी शब्दकोश	01	कालिका प्रसाद, मुकुंदलाल श्रीवास्ताव, राजवल्लभ सहाय	ज्ञानमंडल, इलाहाबाद
2	हिंदी शब्दसागर	11	श्यामसुंदर दास	नागरी प्रचारिणी सभा
3	प्रामाणिक हिंदी शब्दकोश	05	रामचन्द्र वर्मा	हिंदी साहित्य सम्मेलन
4	वृहत प्रामाणिक हिंदी कोश	01	हरदेव बाहरी	लोकभारती प्रकाशन
5	बृहत हिंदी कोश	02	डॉ. श्यामबहादुर वर्मा	प्रभात प्रकाशन
6	बृहत हिंदी कोश	01	हरदेव बाहरी	राजपाल
7	उर्दू हिंदी शब्दकोश	01	मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ाँ 'मद्दाह'	उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान
8	ऑक्सफोर्ड हिंदी अँग्रेज़ी कोश	01	आर.एस. McGregor	ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन
9	ऑक्सफोर्ड अँग्रेज़ी हिंदी कोश	01	एस.के.वर्मा, आर.एन. सहाय	ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन
10	वर्धा हिंदी शब्दकोश	01	प्रो. रामप्रकाश सक्सेना	म.गा.अं.हिं.वि., वर्धा & भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

इन शब्दकोशों में ज्ञानमंडल के बृहत हिंदी शब्दकोश को सामान्यत: लोग सबसे अधिक प्रामाणिक मानते हैं। रामचंद्र वर्मा का 'प्रामाणिक हिंदी कोश' पारंपरिक अर्थों तथा संस्कृतनिष्ठ एवं देशज शब्दावली के लिए सबसे उपयुक्त है। हिंदी शब्दसागर में दिए गए अधिकांश अर्थ अप्रचलित प्राप्त होते हैं। अत: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कम उपयोगी है। अरबी/फ़ारसी के शब्दों के लिए मद्दाहकृत 'उर्दू-हिंदी शब्दकोश' को सबसे अधिक प्रामाणिक माना जाता है। इसी प्रकार अँग्रेज़ी शब्दों के उच्चारण, प्रयोग एवं अर्थ देखने के लिए ऑक्सफोर्ड के शब्दकोश की उपयोगिता निर्विवाद है।

5. समस्याएँ

यदि वर्तमान में हिंदी शब्दकोश निर्माण किया जा रहा हो तो निर्माणकर्ता को कौन-सी समस्याएँ आएँगी। यह एक बड़ा प्रश्न है। फिर भी 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' के निर्माण में काम करते हुए जो मैंने अनुभव किया उसके आधार पर इसमें आने वाली समस्याएँ निम्नलिखित हैं :

5.1 वर्तनी के मानक रूप की समस्या : देवनागरी लिपि के संबंध में कहा जाता है कि यह विश्व की सबसे वैज्ञानिक लिपि है। किंतु वर्तमान में यह धारणा टूटने लगी है। इसका कारण है संयुक्ताक्षरों एवं कुछ वर्णों के लेखन में आने वाली समस्याएँ। उदाहरण के लिए 'द्र' और 'द्ध' को देखने लगता है कि 'द' पूरा है और 'व' या 'ध' आधे हैं। किंतु वास्तव में 'द' आधा है और 'व' तथा 'ध' पूरे हैं। अत: वैज्ञानिकता पर प्रश्न-चिह्न लगना स्वाभाविक है। इसी प्रकार 'चिह्न' और 'ब्रह्म' जैसे शब्द हैं जिनका उच्चारण 'चिन्ह' और 'ब्रम्ह' होता है।

अत: वैज्ञानिकता की समस्या उत्पन्न होती है जिससे मानक रूप निर्माण करना कठिन हो जाता है। इस क्रम में पंचमाक्षर प्रयोग एवं अनुस्वार प्रयोग संबंधी समस्या भी देखी जा सकती है, जैसे- 'हिंदी' और 'हिन्दी' दोनों रूप लिखे जाते हैं और कोशों में प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि किसी भी कोश में वर्तनी संबंधी एकरूपता नहीं प्राप्त होती। अत: इन सभी के लिए एक मानक रूप निर्मित करने की समस्या सबसे पहले आती है।

हिंदी भाषा की वर्तनी एवं शब्दावली आदि के मानकीकरण का कार्य भारत सरकार द्वारा 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' को दिया गया है और समय-समय पर

निदेशालय द्वारा मानक वर्तनी संबंधी नियमावली या पुस्तिका जारी की जाती है किंतु उनमें भी परस्पर विरोधाभास प्राप्त होता है और अधिकांश लोगों तथा संस्थानों द्वारा इसका पालन भी नहीं किया जाता। संयुक्ताक्षरों के संबंध में निदेशालय द्वारा कहा गया कि ये अलग-अलग लिखे जाएँ-

आदि।

किंतु अधिकांश विद्वान इस पर सहमत नहीं हैं। अत: हिंदी का शब्दकोश बनाते हुए सर्वप्रथम मानक वर्तनी एवं वर्तनी की एकरूपता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है।

5.2 वर्णानुक्रम : सामान्यत: एक हिंदी शब्दकोश में जो वर्णक्रम होता है उसे अकारादि क्रम कहते हैं और इसमें 'अ' से 'ह' तक वर्णों को क्रम में रखा जाता है। किंतु यह पारंपरिक पद्धति है। अब उच्चारण की दृष्टि से हिंदी में अनेक परिवर्तन हुए हैं। उदाहरण के लिए 'ऋ' अब स्वर न रहकर 'रि' हो गया है। इसी प्रकार 'ज्ञ' अब 'ज् + ञ' न होकर 'ग् + य' हो गया है। 'क्ष' भी अब धीरे-धीरे 'छ' हो गया है। अत: एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इन परिवर्तनों के बाद भी क्या हम परंपरा को ढोते रहेंगे या कुछ परिवर्तन करेंगे।

इस संबंध में भी एकाधिक मत देखने को मिलते हैं। एक ओर जहाँ अधिकांश लोग परंपरा को बनाए रखने के पक्षधर हैं वही कुछ परिवर्तन चाहने वालों में मतैक्य का अभाव है। कुछ लोग 'ऋ', 'क्ष' और 'ज्ञ' तीनों को ही अंत में रखना चाह रहे हैं और कुछ लोग केवल 'ऋ' या 'ज्ञ' तो कुछ केवल 'ज्ञ' को। अत: इस संबंध में भी कोशकार को पहले निर्णय लेना चाहिए।

5. व्युत्पत्ति: व्युत्पत्ति शब्दों के मूल उत्स को बताती है। हिंदी में अनेक भाषाओं से शब्द आकर इस तरह से प्रचलित हो गए हैं कि बिना जाँच-पड़ताल के देखने पर उनकी ठीक व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता। अभी तक निर्मित कोशों में भी कुछ शब्दों की गलत व्युत्पत्ति दी गई है। असली समस्या तो तब उत्पन्न होती है जब एक ही शब्द की दो अलग-अलग शब्दकोशों में अलग-अलग व्युत्पत्ति दी गई होती है। ऐसी स्थिति में कोशकार को वास्तविक व्युत्पत्ति का पता लगाना होता है। किसी भी शब्द की व्युत्पत्ति को लेकर अनुमान लगाने का कार्य बिल्कुल नहीं करना चाहिए क्योंकि अनुमान गलत होने का खतरा सदैव बना रहता है। उदाहरण के लिए 'रिक्शा' शब्द देखने पर अँग्रेज़ी का जान पड़ता है जबकि यह जापानी का है।

तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत दी जानी चाहिए। देशज शब्दों की व्युत्पत्ति हिंदी ही होगी। एक समस्या 'अरबी' और 'फ़ारसी' के शब्दों को लेकर आती है। इसके लिए किसी प्रामाणिक शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है।

5.4 आगत शब्दों का उच्चारण : आगत शब्दों का उच्चारण भी एक बड़ी समस्या है। अधिकांश अँग्रेज़ी शब्दों के साथ इसे देखा जा सकता है। जिसमें मूल उच्चारण अलग होता है और उसका हिंदी या भारतीय उच्चारण अलग। साथ-ही अँग्रेज़ी शब्दों को हिंदी वर्तनी में लिख देना भी एक अलग प्रकार की समस्या है। अत: अँग्रेज़ी उच्चारण के निकटतम और हिंदी उच्चारण तथा वर्तनी के अनुरूप लिखने का रास्ता अपनाया जाता है। ऐसी समस्या अरबी/फ़ारसी शब्दों के साथ भी देखी जा सकती है, जैसे: कियामत/कयामत, इम्तिहान/इम्तेहान आदि।

5.5 आगत शब्दों का लिंग-निर्धारण: हिंदी में दो ही लिंग होने के कारण लिंग-निर्धारण की समस्या हमेशा आती रहती है। यह विदेशी भाषाओं के शब्दों के संदर्भ में और महत्वपूर्ण हो जाती है, मुख्यत: अँग्रेज़ी शब्दों के संदर्भ में। वैसे तो सामान्य नियम के अनुसार अँग्रेज़ी के इकारांत शब्दों को छोड़कर सभी शब्दों को पुल्लिंग मान लिया जाना चाहिए। फिर भी वे शब्द जिनका हिंदी अर्थ स्त्रीलिंग हो और दोनों समान रूप से प्रचलित हों तो ऐसा करना कठिन हो जाता है, जैसे: ट्रेन, पेन आदि।

5.6 अर्थ में शब्दवर्ग का क्रम: कुछ शब्द एक से अधिक शब्दवर्गों में प्रचलित होते हैं। ऐसी स्थिति मुख्यत: 'संज्ञा' और 'विशेषण' के संदर्भ में प्राप्त होती है। इसमें यह समस्या उत्पन्न हो जाती है कि पहले संज्ञा अर्थ दें या विशेषण अर्थ। इनके क्रम निर्धारण की दो विधियाँ संभव हैं, प्रथम- शब्दवर्ग के क्रम के आधार पर, अर्थात- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि के क्रम में, जिसमें संज्ञा अर्थ पहले आएगा। द्वितीय- प्रचलन के आधार पर, अर्थात जो अर्थ अधिक प्रचलित होगा वह पहले आएगा। इस विधि में यह व्यवस्था होनी चाहिए कि यदि दोनों अर्थ समान रूप से प्रचलित हों तो संज्ञा अर्थ पहले दिया जाएगा।

5.7 चित्र संबंधी: यदि शब्दकोश में चित्र दिया जाना हो तो उन आधारों का निर्माण करना कठिन होता है जिनके अनुसार चित्र दिए जाएँगे। इसमें निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पहले तय किए जाने चाहिए :

(क) किस प्रकार के शब्दों के चित्र दिए जाएँगे (जैसे: पारंपरिक, अप्रचलित, पशु, पक्षी, शरीरांग आदि)?

(ख) चित्रों का आकार क्या होगा?

(ग) संपूर्ण शब्दकोश के कितने प्रतिशत शब्दों के चित्र दिए जाएँगे?

6. सुझाव

यदि आप शब्दकोश का निर्माण करने जा रहे हों तो निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना समीचीन होगा :

6.1 शब्दकोश के आकार, प्रकार, उद्देश्य और प्रयोक्ता का निर्धारण सबसे पहले कर लिया जाए।

6.2 प्रविष्टियों के क्रम एवं प्रत्येक प्रविष्टि में दी जाने वाली सूचनाओं की संख्या एवं उनके क्रम को सुनिश्चित कर लें।

6.3 डाटा संकलन करते हुए सभी अनुमानित हेडवर्डों को पहले संकलित कर लिया जाना चाहिए।

6.4 यदि कंप्यूटर का प्रयोग करना हो तो संकलन एवं प्रविष्टि संबंधी कार्य करने वाले सहायकों को सर्वप्रथम संबंधित सॉफ्टवेयर का पहले प्रशिक्षण दें एवं उनको होने वाली कठिनाइयों के बारे में पूछें।

6.5 प्रविष्टियों के अलग मूल्यांकन हेतु अलग मूल्यांकन समिति का गठन किया जाए।

6.6 संपादन मंडल में ऐसे लोगों को रखा जाना जाए जिनमें विद्वता के साथ-साथ प्रविष्टियों को देखने का भी समय हो। साथ-ही प्रविष्टियों का फाइनल रूप इनकी नज़र से गुज़रना चाहिए।

7. संदर्भ सूची

1. प्रसाद, कालिका & श्रीवास्ताव, मुकुंदलाल & सहाय, राजवल्लभ (2016). बृहत हिंदी शब्दकोश. ज्ञानमंडल, इलाहाबाद।
2. वर्मा. रामचंद्र (2009). वृहत प्रामाणिक हिंदी कोश. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. 'मद्दाह', मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ाँ (2011). उर्दू हिंदी शब्दकोश, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।
4. McGregor, आर.एस. (2002). ऑक्सफोर्ड हिंदी अँग्रेज़ी कोश, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. सक्सेना, रामप्रकाश (2014). वर्धा हिंदी शब्दकोश. म.गा.अं.हिं.वि., वर्धा & भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।